ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 7, Issue 6, June 2017 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

राजा नाहर सिंह का 1857 की क्रान्ति में योगदान

डॉ0 वन्दना कलहंस
एसोसिएट प्रोफेसर
विभाग–इतिहास,
बी0एस0एन0वी0, पी0जी0कालेज,लखनऊ।

देश की आजादी के लिए अनगिनत वीरों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया है। भारतीय इतिहास में जिन शहीदों का नाम अंकित है, उनमें बल्लभगढ़ रियासत के आजादी के मतवाले शहीद राजा नाहर सिंह का नाम हरियाण ही नहीं वरन् देश के इतिहास में सदैव अमर रहेगा। प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम जिसे 1857 की महान क्रान्ति के नाम से जाना जाता है, इसमें बल्लभगढ़ के राजा नाहर सिंह अग्रणी क्रान्तिकारियों में थें, जिन्होंने मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को दिल्ली का शासक स्थापित करने तथा राजधानी की सुरक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगा दी थी।

बल्लभगढ़ वंश की सातवीं पीढीं में 06 अप्रैल 1821 ई0 को नाहर सिंह का जन्म हुआ। उनके पिता का नाम राम सिंह था जो बहुत ही कला प्रेम, धार्मिक और प्रजावत्सल शासक थे। पत्नी बसन्त कौर से उनके दो पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमशः नर सिंह और रणजीत सिंह रखे गयें। राजकुमार रणजीत सिंह अपने ननिहाल साहनपुर की कुचेसर रियासत में चले गये क्योंकि इनके नाना के यहॉ कोई पुत्र उत्तरधिकार के लिए नहीं था। नाहर सिंह (नर सिंह) के जन्म के समय ही उनके कुलगुरू पण्डित कुलकर्णी ने उनके बारे में जन्म कुण्डली के आधार पर भविष्यवाणी की कि **''यह बालक अपने वंश की याशोवृद्धि का कारण तथा कुलदीपक बनेगा। वीरता और पराक्रम में बह चन्द्रवंश का गौरव सिद्ध होगा।**[1] 1829 में उनके पिता का देहान्त हो गया और बालक नाहर सिंह मात्र 09 वर्ष की अल्प आयु में गद्दी पर बैठा। 10 वर्ष की अवस्था तक इस बालक ने 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश' की अनेक कथाओं का अध्ययन कर लिया था। रामायण के लक्ष्मण और महाभारत के अर्जुन इन्हें बहुत प्रिय पात्र लगते थे। एक बार बाल्यकाल में इनके पिता ने अपने दोनों पुत्रों की परीक्षा लेते हुए उनसे पूछा कि श्रेष्ठ राजा में क्या गुण होने चाहिये? तब रणजीत सिंह ने कहा कि उसे शस्त्र विद्या का ज्ञान होना चाहिये। नाहर सिंह ने बीच में टोकते हुए कहा कि **''शास्त्र के बिना शास्त्र विद्या का कोई मूल्य नहीं है''** जहॉ एक वीर सैनिक की विशेषता सिर्फ शस्त्र विद्या है, वहीं पर एक श्रेष्ठ राजा के लिए शस्त्र और शास्त्र दोनों का ज्ञान आवश्यक है। ईश्वर को भी इसी बालक की परीक्षा लेनी थी कि अल्पायु में पिता का देहान्त हो गया और बालक नाहर सिह को गद्दी पर बिठाकर इनके चाचा अभय सिंह ने सम्पूर्ण राजकाज की व्यवस्था संभाली। राजा नाहर सिंह की शिक्षा राज पाठशाला में पण्डित कुलकर्णी द्वारा पूर्ण करायी गयी। मौलवी रहमान खॉ ने इन्हें उर्दू व फारसी का ज्ञान दिया। सेनापति जोधा सिंह ने घुड़सवारी, तैराकी, तीरन्दाजी, भाला व तलवार चलाने की कला सिखाई। 15 वर्ष की उम्र पूरी करते–करते नाहर सिंह शस्त्र विद्या में निपुण हो गए।

नाहर सिंह का नाम प्रारम्भ में नरसिंह था।[2] एक बार जब वह अपने अंगरक्षकों के साथ शिकार खेलने गये तो किसी हिरण का पीछा करते हुए इनका सामना एक शेर से हो गया। काफी दॉव पेच खेलने के बाद युवराज ने शेर को मार डाला। किन्तु इस खतरनाक प्रयास में इनके एक अंगरक्षक, वीर हरचन्द सिंह को शेर ने मार दिया। तब से इनकी वीरता से प्रभावित होकर इनकी माता बसन्त कौर ने इनका नाम नर सिंह से परिवर्तित कर नाहर सिंह रख दिया।[3]

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 7, Issue 6, June 2017 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

उस स्थान पर वीर हरचन्द की याद में गॉव हरचन्दपुर बसा दिया जो आज भी बल्लभगढ़ से जाने वाले सोहना मार्ग पर स्थित है। 16 वर्ष की आयु में इनका विवाह कपूरथला राज घराने की राजकंमारी किशन कौर (रघुवीर कौर) से हुआ। 18 वर्ष की आयु में 20 जनवरी 1839 की बसन्त पंचमी के दिन इनका विधिवत राज्यरोहण हुआ।[4]

राजा नाहर सिंह फुर्तीला व सुन्दर युवक था, जिसकी बड़ी–बड़ी आकर्षक ऑखें व चौड़े कन्धे थे। वह मूछें रखता था और पारम्परिक भारतीय पगड़ी पहनता था, जिस पर हीरे जवाहरात जड़े हुए थे और गले में हीरे व मोतियों की माला पहनता था। उस जमाने में जब उसके समकक्ष दूसरे मुखिया सामन्त, राजा व नवाब शराव व सुरा की बुराइयों में लिप्त रहते थे तथा बहुपत्नी व्यवस्था रखते थे, वहीं राजा नाहर सिंह का व्यक्तिव अलग ही था। वह अनुशासंन प्रेमी, आत्म संयमी और स्वभाव के परोपकारी व दानशील थे।[5]उनकी प्रजा उनसे बहुत खुश थी। वह धर्म निरपेक्ष स्वभाव के थे परन्तु हिन्दू धर्म के संरक्षक थे। किसी भी धर्म के विरूद्ध अन्याय के खिलाफ थे। वह सभी धर्मो के प्रति सहिष्णु थे।

नाहर सिंह बहादुर शाह को अपनी धर्म निरपेक्षता के बारे में लिखते हैं, यद्यपि मैं दिल से हिन्दू धर्म को मानता हूॅ, फिर भी मैं मुसलमान नेताओं के आदेशों का अनुकरण करता हूॅ और धर्म के अनुयाईयों का आज्ञाकारी हूॅ। मैंने बल्लभगढ़ के किले में शानदार संगमरमर की मस्जिद बनवाई है और अपने किले के साथ ही शानदार ईदगाह बनवाई है।[6] इसके अतिरिक्त नाहर सिंह ने अपने प्रशासन में भी बहुत से मुसलमान अधिकारी नियुक्त किये हुए थे।

राजा नाहर सिंह एक अच्छे शासक थे और उनमें शासक के समस्त श्रेष्ठ गुण निहित थे। यह हो सकता है कि वह पूरी तरह स्वतंत्र रूप से कार्य करने में सक्षम न हो क्योंकि कई विशेष मामलों वह दिल्ली में शासन कर रही मुगल सत्ता पर निर्भर था। परन्तु यह निश्चित है कि उसके छोटे से क्षेत्र में उनकी शक्तियॉ सर्वोच्च थी और अपने क्षेत्र के 28 गॉवों में उसे पूरे–पूरे अधिकार थे।[7]

अंग्रजों ने नाहर सिंह के पूर्वजों की बल्लभगढ़ की 210 गॉव की रियासतों को तोड़कर उसे केवल 28 गॉव की रियासत ही बनाकर रख दिया था तथा शेष गॉवों को जब्त कर लिया था। उन्होंने राजा के दैनिक राजकीय कार्यो में भी हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया था, जिससे वह अंग्रेजों से काफी नाराज था व उनसे छुटकारा पाने की तलाश में था। 10 मई 1857 को जब मेरठ में सैनिकों ने गोली चलाकर क्रान्ति का शुभारम्भ किया तो नाहर सिंह भी तन–मन–धन से इस क्रान्ति में कूद पड़े थे।[8]

बल्लभगढ़ की छोटी सी रियासत दिल्ली से केवल 20 मील की दूरी पर थी। नाहर सिंह के पूर्वजों, जिनमें राजा बलराम अत्यन्त मेहनती और साहसी व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी सूझबूझ से बल्लभगढ़ की छोटी सी ठिकानेदारी को बढ़ाकर 210 गॉवों की बड़ी रियासत कायम कर ली थी एवं बल्लभगढ़ में किले व महलों का निर्माण करावाया था। शाही सेना ने जो कि छिन्न–भिन्न हो चुकी थी बार–बार बलराम की ताकत को कम करने के लिए बल्लभगढ़ पर आक्रमण किये, लेकिन आखिर सुदृढ़ दुर्ग की अजेयता को स्वीकार करते हुए बल्लभगढ़ नरेश से मित्रता के स्थायी सम्बन्ध कर लिए।

अंग्रेजी जनरल लार्ड लेक ने 1803–1805 ई0 में भरतपुर की जाट रियासत पर आक्रमण किए। इनसे युद्ध में बल्लभगढ़ रियासत ने उसका साथ दिया था। तभी जनरल लेक न बल्लभगढ़ के राजा बहादुर सिंह के पास 210 गॉवों मे से सिर्फ 28 गॉवों को छोड़कर बाकी जब्त कर लिये और यह रियासत छोटी सी रह गयी। 1806 में राजा बहादुर सिंह का निधन हो गया। कुछ समय तक इस वंश के कई शासक आये और 1825 में राजा राम सिंह रियासत के प्रशासक बने। उन्होंने अपने शासन काल

में ही रामगंज (बल्लभगढ़) का निर्माण एक अच्छे व्यापारिक केन्द्र अर्थात मण्डी के रूप में किया।[9] उनका युग स्थापत्य कला की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण था। 1829 में उनकी मृत्यु हो गई और बालक नाहर सिंह को गद्दी पर बैठा दिया गया। 1836 में नवल किशोर नाहर सिंह की अल्पायु का फायदा उठाकर निरंकुश शासक बन बैठा और नाहर सिंह की मुहर के साथ मनमानी करने लगा।

राजा नाहर सिंह जैसा दूरदर्शी भला यह कैसे सहन करता। उसने सुनियोजित राजनीति शुरू कर दी तथा अपने मामा द्वारा शुरू किये गये आर्थिक कुप्रबन्धों, जिनके कारण काफी धन फिजूलखर्ची में बर्बाद हो चुका था, पर गहरी नजर रखनी शुरू की। इन दिनों उसके कर्मचारी व विश्वासपात्र अधिकारी भी धोखेबाज व बेईमान बन गये थे। उन्होंने बल्लभगढ़ राज्य के खजाने से 11 लाख 25 हजार रूपयों का गबन कर लिया। उन्होंने प्रधानमंत्री, हकीम अब्दुल हक ने अकेले ही 10 लाख रूपये हड़प लिये थे, उसके वकील मुक्ता प्रसाद ने 15000 रू0 हजम कर लिये, उप प्रधानमंत्री निशान अली ने 10000 रूपये तथा सहायक प्रधानमंत्री शेर ली खॉ ने 25000 रू0 हड़प कर लिये। इस हेराफेरी के दौड़ में राजा का दीवान भी पीछे नहीं रहा। उसने राजा के खजाने से 10000 रू0 लिये।

इस हालात को देखते हुए उसने 18 वर्ष की आयु में 20 जनवरी 1839 को बसंत पंचमी के दिन राज्य की बागडोर स्वयं संभाल ली।[10] 1839 से 1857 तक अपने राज्य में काफी प्रगति करवाई। राज्य में बसन्त पंचमी व बलदेव छट को विशेष उत्सव के रूप में मनाया जाता था।

नाहर सिंह के अधिकतर अधिकारी, जो उनका धन हड़प चुके थे, अब उन्हें छोड़कर चले गये थे। वे ज्यादातर दिल्ली जाकर बस गये थे। उपने आप को बचाने और जॉच पड़ताल से दूर रहने के लिए उन्होंने अफवाह फैला दी कि राजा नाहर सिंह दो तरफ चाल चल रहे हैं। उन्होंने मुगल सम्राट बहादुर शाह को बहकाकर यह विश्वास दिया कि बल्लभगढ़ राजा सिर्फ दिखावे के लिए ही सम्राट के प्रति, परन्तु अन्दर ही अन्दर उसकी अंग्रेजों से सांठ–गांठ और मिलीभगत है। वह गोला बारूद अपने स्वार्थ के लिए इकट्ठा कर रहा है। उसने यात्रियों व व्यापारियों के लिए सड़क बंद कर दी है। अफसरों की चोर बाजारी और व्यापार घट जाने से नाहर सिंह की आर्थिक दशा बहुत खराब हो गयी थी क्योंकि कलकत्ता, कानपुर, देहली, अम्बाला और लाहौर से होने वाला व्यापार लगभग खत्म हो चुका था और उसके व्यापारिक केन्द्र लूट कर तहस–नहस कर दिये गये थे।

नवयुवक राजा नाहर सिंह की यह दूरदर्शिता ही कही जायेगी कि उसने अपने राज्य को सुचारू रूप से चलाते हुए एक तरफ मुगल साम्राज्य और दुसरी तरह अंग्रेजों के खतरे का सामना किया। उन्होंने दिन प्रतिदिन बढ़ने ववाले अंग्रेजी खतरे का सामना करने के लिए मुगल बादशाह से मित्रता की ली थी। मित्रता के साथ ही लड़खड़ाते मुगल साम्राज्य का बहुत सा उत्तरदायित्व राजा नाहर सिंह ने अपने कन्धों पर ले लिया। परिणामतः दिल्ली नगर की सुरक्षा व सुव्यवस्था की बागडोर बादशाह ने राजा को दे दी।[11] शाही दरबार में राजा नाहर सिंह को विशेष सम्मान के रूप में सोने का सिंहासन मिलता था और वह भी बादशाह के बिल्कुल समीप। इस प्रकार टूटते हुए मुगल साम्राज्य की ढाल के रूप में सम्राट बहादुर शाह के यदि कोई विश्वस्त सहायक थे, तो वह राजा नाहर सिंह ही थे। वह हर संकट के समय दिल्ली की सहायता के लिए तैयार रहते थे।

परन्तु समय की गति तो किसी के रोके नहीं रूकती। धीरे–धीरे दिल्ली का तख्त अंग्रेजों के शिकंजे में आता गया। यह देखकर राजा नाहर सिंह सशंकित हो उठे। उन्होंने दिन–रात दौड़–धूप करके सैन्य संगठन किया और इस योजना की सफलता के लिए यूरोपीय कप्तानों को अपनी सेना में

सम्मानीय पद दिये। पीयरसन को दिल्ली में बल्लभगढ़ राज्य का रेजीडेन्ट नियुक्त किया तथा बल्लभगढ़ की सेना को यथा सम्भाव आधुनिक अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित किया।

1854 में कुछ ब्रिटिश अधिकारी मेवात में घुस आये। बहाना शिकार खेलने का था परन्तु नीयत कुछ और थी। वे कुछ मेव चौधरियों को जो नगीने के पास के रहने वाले थे, पकड़ कर ले गये। मेवों की पंचायत ने आकर राजा नाहर सिंह से प्रार्थना की। दूसरी तरफ तेवतिया पाल के चौधरी भी नाहर सिंह से आकर मिले और अंग्रेजों के प्रति अपने असंतोष को व्यक्त किया। 1856 में गंगा (घग्गर) के बीच के पूरे क्षेत्र की प्रतिनिधि सभा सर्व खाप की पंचायत की बैठक दिल्ली के पास अलीपुर गॉव में हुई, जिसमें राजा नाहर सिंह के अतिरिक्त अनेक प्रमुख व्यक्ति उपस्थित हुए। इस पंचायत में भी इस पूरे जन क्षेत्र से अंग्रेजों की नीतियों के प्रति असन्तोष व्यक्त था।

सर्वखाप पंचायत और विशेषकर राजा द्वारा किये गये अपमान का बदला लेने के लिए कम्पनी ने (1856 में) बल्लभगढ़ के दीवान बांकेलाल को राजकोष से भारी धनराशि का गबन करने का प्रलोभन दिया और ऐसा करने पर उसे दिल्ली में ब्रिटिश रेजीडेन्ट द्वारा आश्रय प्रदान किया। राजा नाहर सिंह को इस षडयंत्र का पता लगने से पहले ही दीवान बांकेलाल को रेजीडेन्ट बहादुरशाह से पनाह दिलवा दी।[12] जब यह समाचार नाहर सिंह को मिला तो वे आग बबूला हो उठे और निश्चय किया कि गढ़–गंगा के मेले पर बादशाह के खिलाफ बगावत की घोषणा की जायेगी परन्तु राज पुरोहित पंडित नारायण सिंह और दूसरे राज पुरूषों ने उन्हें समझाया कि जब तक पूरे क्षेत्र के राजाओं और नवाबों का सहयोग नही मिलता, बगावत का झण्डा बुलन्द करना घातक होगा। कम्पनी की शाक्तिशाली सेनाओं का मुकाबला करने का अभी समय नहीं है, क्योंकि राजा की सेना का पुनर्गठन और तैयारी की जानी है। अतः राजा इस घटना को बड़े रोष और क्रोध के साथ अपने मन में दबाकर यह कड़वा घूट पी गया।

1856 के अंत तक विद्रोह के काले बादल भारतीय आकाश पर छाने लगे। इसलिए राजा विद्रोह के खतरे से निपटने के आहवान पर हरियाण क्षेत्र के विशेषकर गॉव के हजारों लोग जिनमें अधिकांश भोले–भाले गरीब और निरक्षर थें, उनकी सेना में शामिल हो गये। दूर–दूर से आये इन लोगों ने अपने नेता नाहर सिंह के नेतृत्व में इन सांझे, संघर्ष में सक्रिय रूप से भाग लिया। एक सच्चे देशभक्त के नाते वह होने वाले विद्रोह में अंग्रेजों से लड़ना चाहता था। ऐसा ही उसने किया भी। यही कारण था कि क्रान्ति के आरम्भ से ही राजा नाहर सिंह ने उनका नेतृत्व सम्भाला। मेरठ विद्रोह की सूचना पाते ही नाहर सिंह तुरन्त विद्रोह में कूद पड़े जैसे कि उन्हें अवसर की प्रतीक्षा ही थी। उन्होंने हिण्डन के युद्ध में अपनी सेनाएं भेजी। उधर 17 मई को राजा नाहर सिंह की इकलौती बेटी का विवाह फरीदकोट रियासत के राजकुमार विक्रम सिंह से निश्चित हो चुका था। एक समस्या थी कि ऐसी सूरत में जव संग्राम छिड़ा हो, विवाह सम्पन्न कैसे हो? पूरे जनपद में चारों ओर अव्यवस्था फैली हुई थी। ऐसी स्थिति में बारात का आना और शादी सम्पन्न होना कठिन लगने लगा। तभी राजकुमार का विवाह राजकुमार विक्रम की सोने की तलवार से ही सम्पन्न कर दिया गया और राजा नाहर सिंह पूरे मनोयोग से संघर्ष में कूद पड़े। 21 मार्च 1857 को बैरककपुर में मंगल पाण्डे के नेतृत्व में विद्रोह की शुरूआत का समाचार उत्तरी भारत में बहुत तेजी से फैला और अपने नेताओं के साथ स्थानीय लोग ब्रिटिश शासन के विरूद्ध तत्काल उठ खड़े हुए। 11 मई 1857 को अन्तिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर के राज में दिल्ली भी इस विद्रोह में फँस गयी। दिल्ली के चारों ओर अंग्रेजी सेना दबाव बढ़ने लगा तो बादशाह ने नाहर सिंह को दिल्ली के सैनिक दस्तों की कमान करने हेतु बुलावा भेजा।[13]

राजा नाहर सिंह का आगरा और पूर्व के दूसरे स्थानों से हो रहे यातायात व संचार प्रणाली पर पूर्ण नियंत्रण था। इस क्षेत्र के नियंत्रण में उनकी क्षमता पर मुगलों को पूरा विश्वास था। 1857 की क्रान्ति के दौरान बहादुर शाह के आदेशानुसार– कि बल्लभगढ़ से बदरपुर और वहॉ से दिल्ली गेट के बीच के राजमार्ग का प्रबन्ध व सुरक्षा की जाय, नाहर सिंह ने पाली, पल्वल व फतेहपुर कस्बो में तहसील व थाने खोल दिये।[14] वह राजमार्ग से मथुरा तक लगातार निगरानी करते रहे।

इस समय नाहर सिंह बल्लभगढ़ में रहकर दक्षिण से अंग्रेजों की आने वाली सैनिक कुमुक को धूल धूसरित करते रहे। बल्लभगढ़ के पास ही एक युद्ध में बहुत से अंग्रेज मारे गये थे ओर उनके रक्त से रामसरोवर का पानी लाल हो गया था। इसी समय बादशाह को उनकी जरूरत थी, इसलिए उनको बल्लभगढ़ छोड़कर दिल्ली जाना पड़ा। पीछे से बल्लभगढ़ की कमान सेनापति गुलाब सिंह सैनी के हाथ में ही रही। उधर राजा नाहर सिंह दिल्ली को संभाले हुए थे। उनके जिम्मे दिल्ली पुलिस की कमान रही। कर्नल लारेन्स ने खुद कहा कि जब तक राजा नारह सिंह के हाथ में कमान है, तब तक उनकी वियज असम्भव है। अंग्रेजों ने चारों तरफ से अपना दबाव बढ़या और नाहर सिंह के होसले पस्त करने के लिए बल्लभगढ़ पर आक्रमण कर दिया, परन्तु सेनापति गुलाब सिंह ने डटकर अंग्रेजों का मुकाबला किया।

20 मई, 1857 को नाहर सिंह ने बहादुर शाह को सूचना दी कि पाली और पलवल के निवासियों ने हिंसा जबरदस्ती करके राजमार्ग पर लूटपाट व डकैतियॉ कर दी। उन्होंने राजमार्ग की सुरक्षा के लिए तुरन्त नये पैदल सैनिक भर्ती किए और आपनी घुड़सवार सेना को नियुक्त कर दिया जो प्रतिदिन दिल्ली में होने वाली घटनाओं का व्यौरा उन तक पहुंचाते थे। इसके साथ ही ये सवार बादशाह की किसी भी प्राकर की सेवाओं के लिए उपस्थित रहते थे। 25 मई, 1857 को राजा नाहर सिंह ने पलवल कस्बे पर अपना अधिकार कर लिया और यहॉ की जिला ट्रेजरी को अपने अधिकार में ले लिया।[15] उन्होंने फतेहपुर के छोटे से कस्बे पर भी अपना अधिकारी कर लिया। पलवल व फतेहपुर 1857 में ब्रिटिश क्षेत्र में थे। वास्तव में ये दोनों नगर एक समय मुगल सम्राटों के अधीन राजा नाहर सिंह से पूर्वजों के थे और वहीं उन पर राज्य करते थे। 1857 की क्रान्ति से नाहर सिंह को अपने पूर्वजों के अधिकार वाले क्षेत्र पुनः प्राप्त करने का सुअवसर मिला। इस कारण ये अंग्रेज उनसे नाराज हो गये और राजा के विरूद्ध चलाये गये अभियोग में अंग्रेजी सरकार के क्षेत्र को अपने राज्य में मिलने का आरोप लगाया। राजा नाहर सिंह अपने ही अफसरों की धोखाधड़ी और गबन के कारण आर्थिक रूप से कमजोर हो गये थे, लेकिन इन बाधाओं और मजबूरियों के बावजूद भी वह क्रान्तिकारी सेना के 1200 सिपाहियों की 20 दिन तक खाद्य व दूसरी आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहे।

क्रान्ति के दौरान एक घुड़सवार दस्ता दफेदार कलन्दर बक्श के नेतृत्व में बहादुर शाह की सहायता के लिए भेजा। राजा नाहर सिंह क्रान्ति के दौरान दिल्ली के एक प्रकार से भाग्य निर्माता बन गये थे। उन्होंने अंग्रेजी अधिपत्य से मुक्त राजधानी दिल्ली की पूर्वी सीमा पर अपनी सेना तैनात कर दी। शाही सहायता के लिए 15000 रूहेलों की फौज सजाकर मो0 बख्त खॉ, जो बाहादुर शाह जफर का पुत्र था और अंग्रेज विरोधी सेनाओं का मुख्य सेनापति था, जिसे विद्रोही सेनाओं–लार्ड गर्वनर जनरल बख्त खॉ बहादुर, कमाण्डर इन चीफ आफ आल दी फोर्सिज की उपाधि दे रखी थी, दिल्ली आ चुका था, परन्तु उसने भी पूर्वी मोर्चे की कमान राजा नाहर सिंह के पास ही रहने दी। सम्राट बहादुर शाह भी नाहर सिंह को अपनी दाहिनी भुजा मानते थे। अंग्रेजी आधिपत्य से मुक्त दिल्ली के 135 दिन के स्वतंत्र जीवन में राजा नाहर सिंह ने दिन–रात परिश्रम करके सुव्यवस्था बनाये रखने तथा मजबूत

मोर्चाबंदी करने का प्रयत्न किया। उनका प्रयास था कि जिस लालकिले को देश भक्तों ने अनेकों कुर्बानियॉ देकर आजाद कराया है, उस पर दोबारा विदेशी झण्डा न फहरा सके।[16]

राजा नाहर सिंह ने दिल्ली से बल्लभगढ़ तक फौजी चौकियों व गुप्तचरों के दल नियुक्त कर दिये। उनकी इस तैयारी से त्रस्त होकर सर जॉन लारेन्स, जो पंजाब के मुख्य आयुक्त थे, ने पूर्व की ओर से दिल्ली पर आक्रमण करना स्थागित कर दिया। लार्ड कैनिंग, जो भारत के गर्वनर जनरल थे तथा क्रान्ति की समाप्ति के बाद महारानी विक्टोरिया की घोषणा द्वारा उन्हें वायसराय भी बना दिया गया था, को लिखे एक पत्र में जॉन लारेन्स ने लिखा था यहॉ पूर्व और दक्षिण की ओर बल्लभगढ़ के राजा नाहर सिंह की मजबूत मोर्चाबन्दी है और उस सैनिक दीवार को तोड़ना असम्भव ही दिख पड़ता है, जब तक कि चीन अथवा इग्लैण्ड से हमारी कुमुक नहीं आ जाती। यही हुआ भी, 13 सितम्बर को जब अंग्रेजी पल्टनों ने दिल्ली आक्रमण किया तब वह कश्मीरी गेट की तरफ से ही किया।[17] एक बार जब अंग्रेज शहर में घुस आये, तब अधिकांश भारतीय सैनिक तितर–बितर होने लगे, बादशाह को किला छोड़कर हुमायूँ के मकबरे में शरण लेनी पड़ी। इन बिगड़ी परिस्थितियों में राजा नाहर सिंह ने बादशाह से बल्लभगढ चलने का आग्रह किया, परन्तु इलाही बख्श नामक एक अंग्रेज एजेनट के बहकाने से बादशाह ने हुमॉयूँ के मकबरे से आगे बढ़ना अस्वीकार कर दिया।

राजा नाहर सिंह की बात न मानने का प्रतिफल यह हुआ कि 21 सितम्बर को कप्तान हड़सन ने चुपचाप बादशाह को गिरफतार कर लिया, परन्तु राजा नाहर सिंह ने बहादुरी दिखाई। उसने अपनी सेना तथा महल के सैनिक जिनमें देश भक्ति की भावना जागृत हो चुकी थी तथा पूर्व से आये सिपाहियों के साथ अंग्रेजों को घेर लिया। खतरे को पहचान कर कप्तान हड़सन ने शाहजादों (मिर्जा मुगल, मिर्जा खिश्र सुल्तान तथा पौत्र मिर्जा अब्बु बख्त) को खूँनी दरवाजे पर गोली मार दी[18] और सम्राट को भी मार डालने की धमकी दी। अतः राजा ने सम्राट की प्राण रक्षा की दृष्टि से घेराबन्दी उठा ली। दिल्ली के तख्त का यह अंन्तिम रक्तरंजित अध्याय था।

भारत माता के इस परमवीर सपूत राजा नाहर सिंह को 09 जनवरी 1858 को लालकिले के सामने चॉदनी चौक में ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध विद्रोह के आरोप में फॉसी पर लटकाया गया था। उनके साथ उनके विश्वस्त साथियों गुलाब सिंह सैनी, खुशहाल सिंह और भूरा सिंह को भी फॉसी दी गयी थी। राजा नाहर सिंह के संघर्ष की कथा खून और ऑसूओं की है। मात्र 35 वर्ष की अवस्था में ही 09 जनवरी 1958 को फॉसी के बाद उनका मृतक शरीर भी अंग्रेजी शासन ने उनके परिजनों को नहीं दिया। अंग्रेजों को भय था कि कहीं उनके मृतक शरीर को देखकर रियासत के लोग भड़क कर शोला न बन जायें और अंग्रजों पर कहर बन कर न टूटें।

ब्रिटिश हुकूमत से 134 दिन तक आजाद दिल्ली का इतिहास राजा नाहर सिंह के बलिदान की याद दिलाता है। नाहर सिंह ने दक्षिण दिल्ली को लोहे की दीवार बनकर किसी भी अंग्रेज को दक्षिण से दिल्ली में घुसने नहीं दिया। आगरा से आती हुई ब्रिटिश टुकड़ियों को उन्होंने मौत के घाट उतार दिया।

उनका बलिदान अनूठा तथा असीम प्रेरणादायक है।

सन्दर्भ

1. प्रभाकर, देवीशंकर स्वाधीनता संग्राम और हरियाणा, 1976 पृष्ठ 88
2. स्मारिका राजा नाहर सिंह, प्रकाशन राजा नाहर सिंह, सोसाइटी 1990।
3. वही।
4. विद्यालंकर, धर्मचन्द, नाहर सिंह कीर्ति कथा 1993 पृष्ठ 49–50
5. स्मारिका (पूर्वोद्धत) 1990
6. वही।
7. प्रोसीडिंग्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस 52 वॉ सैसन नई दिल्ली 1991–92
8. फॉरेन पालीटिकल कन्सलटेशन नं0 51–55, 04 मार्च 1859
9. जुडिशियल नोटः खुशहाल सिंह प्रापर्टी केस, प्रोसीडिंग आफ द इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 52 वॉ
   सैशन नई दिल्ली, 1991–92
10. स्पीयर, परसीवल–दी आक्सफोर्ड हिस्ट्री आफ माडर्न इंडिया–1974 पृष्ठ 200–221
11. वही पृष्ठ 220–221
12. सुन्दर लाल–भारत में अंग्रेजी राज, 1937
13. वही
14. स्पीयर परसीव (पूर्वोद्धत) 1974, पृष्ठ 220–221
15. वही
16. प्रसाद बिमलेश्वर–बोन्डेज एण्ड फ्रीडम वाल्यूम 1, 1977, पृष्ट 532–33
17. डाम मिसलेनियस 1756, वाल्यम 66, पृष्ठ 106–188 राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।
18. प्रो0 सैयद मो0 अजीजुद्दीन हुसैन–1857 Revisited, देहली, 2007 पृष्ठ 163